Sanskrit (Honours)
B.A. (IInd Part)

Date - २६/३/२०
डॉ० स्वामिनी [illegible] मिश्रा
अतिथि शिक्षक
विषय संस्कृत
आर० डी० एस० कॉलेज,
मंगल, [illegible]

लघुसिद्धान्तकौमुदी (अजन्तपुंलिङ्गप्रकरणम्) –

पूर्व में बताया गया है कि किस प्रकार धातृ शब्द के विभिन्न विभक्तियों में रूप सिद्धियाँ होती हैं। अतः

धातरि – 'धा' धातु से कृदन्त में 'ण्वुल्तृचौ' सूत्र से तृच् प्रत्यय होने पर तथा चकार की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत् संज्ञा एवं 'तस्य लोपः' सूत्र से उसके लोप होने पर 'धातृ' शब्द बनता है। 'धातृ' शब्द की कृदन्त होने के कारण 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सप्तमी विभक्ति के एकवचन में 'स्वौजसमौट्.....' सूत्र से 'ङि' प्रत्यय होने पर तथा ङकार की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र इत् संज्ञा एवं 'तस्य लोपः' सूत्र से उसके लोप होने पर 'धातृ+इ' होने की अवस्था में 'ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः' सूत्र से ऋकारान्त 'धातृ' शब्द से 'ङि' परे रहते ऋकार को गुण 'उरण् रपरः' के नियम से 'अर्' होने पर 'धातर्+इ' से 'धातरि' रूप सिद्ध होती है अर्थात् 'धातरि'